एक दिन राजा दशरथ अपने सिपाहियों के साथ शिकार करने वन में गए। राजा दशरथ और उनके सिपाही वन में इधर-उधर घूम रहे थे, तभी उन्हें पानी मैं गढ़गढ़ाने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने समझा कि कोई जानवर नदी में पानी पी रहा है। उन्होंने आवाज की दिशा में तीर चला दिया। जब महाराज दशरथ वहां पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि वहां एक युवक उनके तीर से बुरी तरह घायल पड़ा हुआ है। जब महाराज दशरथ उस युवक के पास पहुंचे और उनसे बात की तो जाने की वह युवक श्रवण कुमार था, जो अपने अंधे माता–पिता की एकलौती संतान था। वह अपने प्यासी माता-पिता के लिए पानी लेने आया था। श्रवण कुमार अपने बूढ़े माता पिता को कुंवर में रखकर तीर्थ यात्रा कराने निकला था। जब उसके प्राण निकलने लगे तब भी उसे अपने आशा हे माता पिता की चिंता सता रही थी। उसने दशरथ को पानी से भरा बर्तन देते हुए उसके माता-पिता को दे आने का अनुरोध किया। श्रवण कुमार के भोले भाले माता पिता ने दशरथ के हाथ से बर्तन लेकर पानी तो पी लिया, लेकिन दशरथ सच्चाई को छिपा नहीं पाया। राजा दशरथ बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था।